के शिष्य गंगादत्त चौबे तथा रंगदत्त चौबे विचार विमर्श करने के बाद इस निर्णय पर पहुँचे कि इसमें षष्ठी तत्पुरूष समास है मगर दूसरा पक्ष इस बात पर अड़ गया कि सप्तमी तत्पुरूष समास है। जब दण्डी जी ने षष्ठी तत्पुरूष समास का पक्ष लिया तो दूसरे पक्ष ने दण्डी जी को शास्त्रार्थ के लिए आहूत कर दिया। दण्डी जी तो इसके लिए तुरन्त तैयार हो गए मगर दूसरे पक्ष वालों में से कोई भी दण्डी जी के समक्ष आने का साहस नहीं जुटा पा रहा था क्योंकि मथुरा निवास की अवधि में कोई भी पण्डित दण्डी जी को परास्त नहीं कर सका था। दूसरे पक्ष वाले कृष्ण शास्त्री को इसलिए नहीं भेजना चाहते थे कि यदि वह कहीं हार गया तो बड़ी समस्या पैदा हो जाऐगी क्योंकि असत्य के आधार पर मिला हुआ मान-सम्मान समाप्त हो जाऐगा। उन्होंने दण्डी जी से कहा कि वे कृष्ण शास्त्री के प्रतिनिधि के रूप लक्ष्मण शास्त्री एवं मुरमुरिया पण्ड्या से ही शास्त्रार्थ कर लें मगर विरजानन्द जी ने कहा कि शास्त्रार्थ तो कृष्ण शास्त्री से ही होगा। विरजानन्द जी न अपने शिष्यों को यह कहकर शास्त्रार्थ स्थल पर भेजा कि जब कृष्ण शास्त्री आ जाएं तो उन्हें बुला लें। लेकिन कृष्ण शास्त्री शास्त्रार्थ करने के लिए आए ही नहीं। सेठ राधाकृष्ण ने चाल चली और कहा कि शास्त्री जी के आने तक विरजानन्द के शिष्य ही लक्ष्मण शास्त्री और मुरमुरिया जी से वार्तालाप करें। वार्तालाप में गाली गलौच आरम्भ हो गई और सेठ राधाकृष्ण ने घोषणा कर दी कि विरजानन्द जी हार गए। दण्डी स्वामी विरजानन्द जी ने जिलाधीश से अपील की मगर उसने कुछ भी करने पर असमर्थता प्रकट की। उधर सेठ राधाकृष्ण ने अपने पक्ष की पुष्टि कराने के लिए विद्वानों को दो-दो सौ रूपए देकर हस्ताक्षर करवा लिए। विद्वान् दो-दो सौ रूपए में बिक गए। स्वामी विरजानन्द जी ने इस पर